पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन-1

❁ डॉ. समणी हिमप्रज्ञा

सृष्टि का जीवन सापेक्ष है। इसमें जड़ और चेतन जितने पदार्थ हैं, वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। सृष्टि के किसी कोने में कुछ भी घटित होता है, उसका प्रभाव सब पर होता है। इकोलोजी का भी यही सिद्धान्त है कि संसार के सब पदार्थ एक दूसरे पर आश्रित है। एक का परिवर्तन दूसरे में भी परिवर्तन लाता है।

धरती, हवा, पानी और वनस्पति सृष्टि संतुलन के आधारभूत तत्त्व है। ये जैसे हैं, वैसे ही बने रहे तो सृष्टि का संतुलन बना रहता है। इनका अनावश्यक दोहन करने से सृष्टि का संतुलन बिगड़ता है। दुनिया में अपना एक निश्चित संतुलन है। सारी प्रकृति तालबद्ध तरीके से चल रही है। कुछ लोग मानते हैं कि इस गतिमयता के पीछे ईश्वर का हाथ है। पर जैन दर्शन ऐसी किसी ईश्वर शक्ति में विश्वास नहीं करता। उसके अनुसार तो सब प्राकृतिक नियमों के अनुसार ही होता है। मनुष्य प्राकृतिक व्यवस्था का उल्लंघन कर वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर कुछ ऐसा प्रयत्न कर रहा है जिससे सहज संतुलन के बिगड़ने का खतरा पैदा हो रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण मिथ्या दृष्टिकोण

कुछ लोगों की मान्यता है कि सब पदार्थ मनुष्य के उपभोग के लिए बने हैं। इस मिथ्यादृष्टिकोण से पर्यावरण का प्रदूषण हो रहा है। अनेक वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता आदि का कथन है कि पर्यावरण प्रदूषण का यही क्रम रहा तो धरती रहने लायक नहीं रहेगी। पर्यावरण आज का सबसे अधिक ज्वलन्त मुद्दा है, क्योंकि इसके भयंकर प्रदूषण ने न केवल किसी एक देश विशेष को हानि पहुंचाई है, अपितु समस्त जीव जातियां इस भयंकर खतरे की चपेट में हैं। एक जीव विज्ञानी ने अपने वक्तव्य में कहा-आज का मनुष्य हजारों-लाखों पशु-पक्षियों को नष्ट कर रहा है। ''काफी अनुसंधान के बाद उसने यह निष्कर्ष निकाला'' एक हजार प्रजातियां नष्ट हो गई हैं और अनेक प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। पर्यावरण प्रदूषण के कारण आज प्रकृति का सारा ही संतुलन गड़बड़ा गया है।

पर्यावरण प्रदूषण के विविध रूप

पर्यावरण विज्ञान का एक पहलू है-पर्यावरण का संतुलन। उसका दूसरा पहलू है-पर्यावरण का प्रदूषण। पर्यावरण प्रदूषण का एक कारण है प्लास्टिक प्रदूषण। भारत में भी विश्व के अन्य देशों की भांति प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण की मात्रा प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। छोटे से छोटे खाद्य पदार्थ हो या पान मसाले के गुटके हो सभी वस्तुएं प्लास्टिक में पैकिंग होती है। पॉलीथिन और प्लास्टिक गांव से लेकर शहर तक सबकी सेहत बिगाड़ रहे हैं। प्लास्टिक के गिलासों में चाय या फिर गर्मदूध का सेवन करने से उसका केमिकल लोगों के पेट में जाता है। इससे डायरिया के साथ अन्य गंभीर बीमारियां होती है। प्लास्टिक और पॉलीथिन का प्रयोग पर्यावरण और मानव सेहत दोनों के लिए खतरनाक है।

प्लास्टिक कचरा वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है। कुछ महीनों पहले कुछ आंकडे आए जिसमें स्पष्ट किया गया कि हर साल पूरी दुनिया में उत्पादित होने वाली लगभग तीस करोड़ टन प्लास्टिक दोबारा उपयोग में नहीं लाया जाता है जिसका दीर्घकालिक प्रभाव कहीं न कहीं पृथ्वी के चारों महासागरों पर पड़ रहा है। एक अन्य शोध निष्कर्ष से पता चला है कि समुद्री मछलियों के पेट में बड़ी मात्रा में प्लास्टिक मिलने लगा है। इस तरह मछलियों में प्लास्टिक का मिलना न केवल मत्सय प्रजातियों के लिए घातक है, बल्कि समुद्री खाद्य पर निर्भर मनुष्यों व अन्य जीवों का जीवन खतरे में पड़ सकता है।

इलेक्ट्रोनिक प्रदूषण

वर्तमान समय में मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटोप, टैबलेट आदि हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं, नित नई तकनीक के साथ अपने आपको जोड़े रखने के जुनून में हम भूल जाते हैं कि पुराने कम्प्यूटर का क्या होगा, पुरानी सीडी एवं दूसरे ई-वेस्ट को कूड़ेदान में डालते वक्त कभी ध्यान ही नहीं देते कि यह कबाड़ हमारे लिए कितना खतरनाक हो सकता है। बढ़ते शहरीकरण के कारण इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का ज्यादा प्रयोग होने लगा है, मगर इससे पैदा होने वाले ई-कचरे के दुष्परिणाम से लोग अनजान है। ई-कचरे के अन्तर्गत सभी इलेक्ट्रोनिक उपकरण आते हैं। पिछले साल दुनिया में सबसे ज्यादा 1.6 करोड़ टन ई-कचरा एशिया में पैदा हुआ, इनमें चीन में 60 लाख टन, जापान में 22 लाख टन और भारत में 17 लाख टन इ-कचरा पैदा हुआ। पिछले साल पैदा हुए ई-कचरे में सात फीसद मोबाइल फोन, प्रिंटर, केलकुलेटर और छोटी आईटी उपकरण रहे, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष लगभग 4 लाख टन ई-कचरा पैदा होता है। घरेलू ई-कचरे जैसे- अनुपयोगी टी.वी. और रेफ्रिजरेटर आदि उनमें लगभग एक हजार विषैले पदार्थ होते हैं जो मिट्टी एवं भू-जल को प्रदूषित करते हैं। इन पदार्थों के संपर्क में आने पर सरदर्द, उल्टी, आंखों में दर्द जैसी समस्याएं हो सकती है।

इसके अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण के निम्नांकित कारण इस प्रकार हैं-

- प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक दोहन।
- सुविधावादी जीवनशैली और बढ़ता हुआ असंयम।

- पृथ्वी का अधिक मात्रा में उत्खनन।
- पानी का अनाप-सनाप अपव्यय, कीट नाशक दवाएं।
- धूम्रपान।
- खेतों में रासायनिक खाद का असंतुलित उपयोग।
- वनों की अंधाधुंध कटाई।
- ध्वनि प्रदूषण।
- निरंतर बढ़ती आबादी।
- औद्योगीकरण।
- वाहनों द्वारा छोड़ा जाने वाला धुंआ।
- नदियों, तालाबों में डाला जाने वाला कूड़ा कचरा।

भूमि प्रदूषण

पत्थर के कोयले आदि के लिए पृथ्वी का दोहन अत्यधिक किया जा रहा है। भूवैज्ञानिकों की आशंका है कि यदि खनिज पदार्थों का उपयोग इसी प्रकार होता रहेगा तो कुछ ही वर्षों में भंडार खाली हो सकते हैं। कुछ स्थानों पर पहाड़ों के उत्खनन से पानी का प्रवाह विपर्यस्त हो जाता है जिससे बहुत सारी कीमती जमीन को नदियां लील जाती हैं। उससे जो प्राकृतिक विनाश होता है उसका अंकन करना कठिन है। पत्थर के कोयलों के जलने से भी प्रदूषण बढ़ता है। एक व्यक्ति एक वर्ष में जितना ऑक्सीजन का उपयोग करता है उतना ऑक्सीजन एक टन कोयले के जलने से खत्म होता है। औद्योगिक इकाइयों में कोयले का जलाया जाना चलता रहा तो कुछ वर्षों बाद तेजाबी बारिश हो सकती है ऐसी संभावना की जा रही है। पृथ्वी के अत्यधिक उत्खनन की समस्याएं स्पष्ट हैं। पर्यावरण की दृष्टि से पृथ्वी के ऊपर की मिट्टी की परत बहुत मूल्यवान है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि- एक सेन्टीमीटर मोटी परत के बनने में लगभग 300 से 1000 वर्ष तक का समय लग जाता है। एक-एक कण के जमने से इस परत का निर्माण होता है। मनुष्य के एक ही झटके से यह परत इतनी क्षतिग्रस्त हो जाती है जिसकी पूर्ति लाखों वर्षों बाद ही संभव हो सकती है।

भगवान् महावीर ने कहा-मेधावी पुरुष हिंसा के परिणाम को जानकर पृथ्वी शस्त्र का समारंभ न करें, दूसरों से उसका समारंभ न करवाये, उसका समारंभ करने वालों का अनुमोदन न करें। नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वी संबंधी क्रिया में व्याप्त होकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करने वाला व्यक्ति अनेक प्रकार के अन्य जीवों की हिंसा करता है। इससे सिद्ध होता है कि महावीर ने पृथ्वीकाय की हिंसा का निषेध किया है। जैन विज्ञान के अनुसार पृथ्वी में रहने वाले कीटाणु पृथ्वीकाय नहीं हैं। पृथ्वीकाय स्वयं जीवाणुओं का पिंड है। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि एक ढेले में कई लाख दर्जन अति सूक्ष्म जीवाणु हैं, जो लाखों वर्ष से धरती को उपजाऊ बनाए हुए हैं।

भूमि की उर्वरता बढ़ाने हेतु रासायनिक खाद का तथा फसल को कीड़ों और रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक दवाओं का उपयोग किया जाता है जो भूमि को प्रदूषित कर देते हैं। इनके कारण भूमि को लाभ पहुंचाने वाले मेंढक एवं केंचुआ जैसे जीव नष्ट हो जाते हैं।

जल प्रदूषण

पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जल मग्न है। फिर भी करीब 0.3 फीसदी जल पीने योग्य है। विभिन्न उद्योगों और मानव बस्तियों के कचरे ने जल को इतना प्रदूषित कर दिया है कि पीने के करीब 0.3 फीसदी जल में से मात्र करीब 30 फीसदी जल ही वास्तव में पीने के लायक रह गया है।

आजादी के बाद तीव्र औद्योगीकरण तथा गहन कृषि के परिणामस्वरूप जल प्रदूषण की समस्या वृहद् स्तर के रूप में सामने आई है। भारत की हुगली नदी संसार की सबसे प्रदूषित जल स्रोतों में से एक मानी जाती हैं। गंगा नदी जिसे हिन्दुओं की पतित पावनी कहा जाता है अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी है। यमुना, गोमती, चम्बल तथा झेलम नदी भी प्रदूषित हो चुकी है। प्रदूषित जल का सेवन करने से निम्नलिखित रोग पैदा होते हैं जैसे त्वचा रोग, पीलिया, टायफाइड, बुखार, कैंसर, जोड़ों के दर्द, गुर्दा तथा हृदय रोग आदि।

जल के बिना जीवन संभव नहीं है। जल जीवन के लिए आवश्यक है। जल पोषक तत्त्व होने के साथ -साथ शरीर के अन्य पोषक तत्त्वों के वहन का कार्य भी सम्पादित करता है। शुद्ध जल शरीर के लिए अत्यंत जरूरी है। शुद्ध जल के अभाव में अनेक बीमारियां पनपने की संभावना रहती है। वर्तमान समय में पीने के लिए शुद्ध जल भी दुर्लभ है क्योंकि चारों ओर प्रदूषण के कारण वातावरण विषाक्त होता जा रहा है। जल का संबंध अन्य क्रियाओं से भी जुड़ा है। भोजन पकाने में, सफाई करने में, विभिन्न उद्योग-धन्धों में, सिंचाई में, वाष्प से चलित ईंजन में, बिजली पैदा करने के लिए विद्युत यंत्रों आदि में जल की अपेक्षा रहती है। इससे स्पष्ट है कि जल जीवन की आधारभूत आवश्यकता है।

आज से 40–50 वर्ष पहले मनुष्य जल का दुरुपयोग नहीं करता था। उसकी आवश्यकताएं भी सीमित थी। उसकी प्रत्येक क्रिया में संयम था। वर्तमान समय में मनुष्य संयम की बात भूल गया है इसीलिए स्नान करने में कपड़े धोने में, घर की सफाई करने में अनाप-सनाप पानी का अपव्यय करता है। परिणामस्वरूप अनेक व्यक्तियों को पीने के लिए पानी नहीं मिल रहा है। जैन दर्शन के अनुसार पानी की एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक कैप्टिन स्कबेसिवी ने यन्त्र के द्वारा एक लघुजलकण में 36450 जीव गिनाये हैं।

जल प्रदूषण से अपकाय की हिंसा तो होती ही है पर वनस्पति, द्वीन्द्रिय प्राणी, मछलियों, यहां तक कि उसका प्रदूषण मनुष्य को भी प्रभावित करता है। पानी में मनुष्य का मल फेंकने से भी उसमें भयंकर प्रदूषण पैदा होता है। 'सेन्ट्रल बोर्ड फॉर प्रिवेंशन एण्ड कंट्रोल ऑफ वाटर सोल्युशन' के अध्यक्ष का मन्तव्य है कि प्रतिदिन दिल्ली में यमुना में दस करोड़ लीटर मल निर्यात होता है, जबकि उसमें दो करोड़ लीटर कचरा भी उद्योगों द्वारा छोड़ा जाता है। सर्वेक्षणों से ज्ञात हुआ है कि प्रतिवर्ष जल प्रदूषणों से लगभग दो लाख व्यक्ति मर रहे हैं। इंग्लेण्ड में प्रतिदिन एक हजार मिलियन लीटर कचरा टेम्स नदी में फेंका जाता है। जर्मनी की राईन नदी में करोड़ों मछलियां प्रदूषित कचरे के कारण मर गई। आयरलेण्ड के समुद्र में हजारों समुद्रपक्षी कीटनाशक पदार्थों के कारण मर गये थे। इसलिए भगवान् महावीर ने कहा है-तं से अहियाए तं से अबोहीये,-जल की यह हिंसा मनुष्य के अहित तथा अबोधि का कारण है। जल प्रदूषण से पौधों व जन्तुओं की मृत्यु हो जाती है। खनिज तेल के रिसाव से जलीय जीवों को बड़ी संख्या में हानि होती है। ऐसे जल से सिंचाई करने पर फसलें नष्ट हो जाती है। रसायनों के कारण भूमि की उत्पादकता में कमी आती है। आचारांग निर्युक्ति में जलकायिक जीवों के सात प्रकार के शस्त्रघात बतलाये गये हैं-

1. उत्सेचन-अर्थात् कुएं आदि जलाशयों से जल निकालना और मूल स्रोत से उसे पृथक् करना।
2. गालन-मोटे कपड़े से जल छानना।
3. धावन-वस्त्र, पात्र आदि धोना और उसके मूल-स्वरूप को खराब कर इधर-उधर फेंकना।
4. परकायशस्त्र-तेल, मिट्टी, क्षार आदि का जल से मिश्रण कर उसके मूल स्वरूप को विकृत करना।
5. स्वकायशस्त्र-नदी का पानी तालाब के पानी का शस्त्र।
6. तदुभयशस्त्र-जल मिश्रित मिट्टी जल का शस्त्र।
7. भावशस्त्र-असंयम द्वारा जल का दुरुपयोग करना।